>

Title: Further discussion regarding situation arising out of delay in preparation for Commonwealth Games, 2010 raised by Shri Kirti Azad on the 09.08.10.

MR. CHAIRMAN: The House may now take up the next business that is reply by the hon. Minister of Youth Affairs and Sports.

युवक कार्यक्रम और खेल मंत्री (डॉ. एम.एस.िगल): सभापति महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया।

महोदय, कल तकरीबन चार घण्टे कॉमनवैल्थ गेम्स पर चर्चा हुई।

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): आपको धन्यवाद कि आप हिन्दुस्तान की भाषा बोल रहे हैं, जबकि आप विदेशी भाषा अच्छी तरह से जानते हैं।

डॉ. एम.एस.िगल : मैं हिन्दी ही बोलता हूं, अंग्रेजी तो आती नहीं है। छोड़ो अंग्रेजी को, बिलकुल हिन्दी बोलेंगे, थोड़ी पंजाबी भी बीच में होगी।...(व्यवधान) क्योंकि हिन्दुस्तान खिचड़ी है और हम भी उस खिचड़ी में हैं।...(व्यवधान) वह भी थोड़ी-थोड़ी आती है, जैसे हो सकेगा, बोलूंगा।

महोदय, कल चार घण्टे की चर्चा को मैंने बड़े आनंद से सुना। संसद और देश का राजनीतिक और डेमोक्रेटिक सिस्टम को कुछ हद तक जानता हूं। इधर, उधर और इधर का विचारों में टकराव होता है और होता भी है। यह हिन्दुस्तान की अच्छी निशानी है, ऐसा मैं मानता हूं। यदि कभी ज्यादा हो जाता है तो मैं इस पवित्र महापंचायत को, It is a place for India to talk in. शक्ति हो बोलने की और हिम्मत हो सुनने की, इसलिए मैं इसे बहुत मानता हूं। कल की चर्चा पर मुझे बहुत खुशी हुई क्योंकि सभी ने अपने विचार रखे और सुने। मैंने हर चीज का अपने दिमाग में नोट लिया क्योंकि मैं केवल खेल मंत्री नहीं हूं, मेरा पूरी जिंदगी खेलों में रूझान रहा है। मैंने मसूरी के स्कूल में 6 साल तक सभी खेल खेले। बॉक्सिंग भी की, मार ही खाई, कभी जीता नहीं है। वह भी जरूरी था, क्योंकि जो आदमी मार खा कर खड़ा रहे, वही आगे चल सकता है, इसलिए मैंने थोड़ी बहुत मार खाई है। कॉमनवैल्थ गेम्स की चर्चा है और इस पर आपको, इनको और सभी को चिंता है, क्योंकि यह बहुत बड़ा स्वयंवर रचाया गया है। वर्ष 1982 के एशियन गेम्स के 30 साल बाद बहुत बड़े लेवल पर खेल हो रहे हैं। इसलिए इसकी चिंता अवश्य होगी। वर्ष 2003 में जब इन खेलों को लिया गया था, उस समय आप सत्ता में थे। यह उम्मीद भी थी कि आपने ही इन्हें करवाना भी है, शायद आप ही इन्हें करवाते। भगवान ने और जनता ने कुछ और कर दिया, इसलिए हम लोग बैठे हैं। इन खेलों पर हर एक चिंतित है, क्योंकि हिन्दुस्तान की इज्जत का सवाल है। खेल आपके हैं, हमारे हैं, लेकिन एक्चुअली देश के हैं।

महोदय, अजनाला जी तरनतारन से एमपी हैं और मेरे दोस्त हैं। इन्होंने जो कहा था, मैं भी वह कहता रहता हूं। इन्होंने पंजाबी में जो कहा था, मैं उसका मतलब आपको बता देता हूं। इन्होंने कहा था कि बारात दरवाजे पर खड़ी है और अब कहते हैं कि लड़की के कान बींद दो, क्योंकि इसको सोने के कांटे डालेंगे। हमारा यह हाल है। 35 दिन में दिल्ली एयरपोर्ट पर हजारों की गिनती में लोग उतरने शुरू हो जाएंगे। तकरीबन 12-14 हजार लोग आने हैं, जिनमें एथलिट्स, हाई आफिशियल्स और मैनेजर्स होंगे। इसलिए हमें चिंता अवश्य होगी।

महोदय, सवाल यह है कि क्यों खेल लिए गए? खेल होने चाहिए था या नहीं? कल भी कुछ लोगों ने इस पर चर्चा की। किसी ने नहीं पूछा मनोहर सिंह तुम्हारे क्या विचार हैं? मैंने अंदर बंद किए हुए हैं, कभी समय आएगा तो बोलूंगा। आज मैं वह नहीं कहना चाहता हूं। सारे देश के लिए वे सवाल समाप्त हो गए हैं।

महोदय, वे फैसले करने थे वर्ष 2003 में, जो भी करते, लेकिन उसके बाद अब तो तैयारी हो, हिन्दुस्तान की इज्जत हो और हिन्दुस्तान की शान हो। 6 अप्रैल, 2008 को मुझे यह ड्यूटी सौंपी गई और मैंने अपनी ड्यूटी को समझा और कहा, उसका रिकॉर्ड टी.वी. और न्यूजपेपर्स, हरेक के पास है। मैंने कहा कि यह पदवी मैंने मान ली, यह मेरी जिम्मेदारी है, क्योंकि उसके ऊपर भी सवाल थे, विचार थे। ठीक है, लेकिन मैंने कहा कि अगर मैंने अपनी जिम्मेदारी मान ली है, तो कांस्टीट्यूशनली अब मेरी ड्यूटी एक ही है कि जल्दी से जल्दी तैयारी पूरी कराऊं और दुनिया भर से जो इतने लोग आएंगे, उनकी आमद का, वैलकम का, जो भी मैं कुछ कर सकता हूं, उसे करूंगा और अच्छे खेल हों और वे लोग खुश होकर जाएं और हम अच्छे-खासे मैडल जीतें। मैं सच्ची बात बोलूं, यदि मैंने पिछले दो साल में कोई कोशिश की है, तो यही की है। उस दिन से यह मामला मेरे सामने है।

महोदय, इन खेलों को कराने में जो चिन्ता प्रकट की गई है और आज हम किस जगह हैं, जिसमें कहा गया कि इतने साल क्यों वेस्ट हो गए और उसमें क्या कुछ नहीं कर सकते थे, वे सवाल अपनी जगह हैं, उनके बारे में सोचा जा सकता है। मैं भी सोचता हूं और मैं भी हिसाब लगाता हूं। हिन्दुस्तान के बिल्डर आज ऐसे हैं, जो बहुत कम समय में ज्यादा अच्छा स्टेडियम बना सकते हैं। जो दुबई बेस्ड कंपनी हमारे यहां खेलों के स्टेडियमों का निर्माण कर रही है, वह जीएमआर कंपनी है। आप सभी जानते हैं कि हिन्दुस्तान के बिल्डर ऐसे हैं कि यदि कैश पेमेंट दें, तो वे चार गुना बड़ा स्टेडियम एक साल में बना देते हैं और वे हिन्दुस्तान में बहुत सारी बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन कर रहे हैं। ये सवाल हो सकता था, लेकिन ये अब पीछे की बातें हैं। अब इन पर सोचने और आपस में बहस करने का कोई फायदा नहीं है।

महोदय, मैं यह बात कह रहा हूं, पीछे जब में उधर बैठा करता था, तो मैंने अपने भाइयों से इस बारे में एक दफा कहा था कि जहां से मैं आया हूं, यानी अमृतसर से, वहां भगवान ने हमारा सिर तो ऐसा लगाया है कि हम इधर को देख सकते हैं, उधर को देख भी नहीं सकते, पीछे की बात तो छोड़े। जो बीत गई, सो बीत गई। जो हो गई सो हो गई। गलत किया, ठीक किया। ऐसे न करते, वैसे करते, इंसान को तो इधर को ही जाना है।

महोदय, अब बात नंबर दो। इन खेलों के ऊपर जो कुछ भी चर्चा यहां हुई है और जो कुछ भी सवाल उठ रहे हैं। उन्हें समझने के लिए इन्हें एक चीज पूरी तरह समझनी होगी। 1982 के गेम्स की चर्चा होती है। मैंने उस समय उन्हें यहां आकर नहीं देखा। मैंने पंजाब से ही, दूर से ही उन्हें फौलो किया था। उस वक्त बड़ी क्लीयर पोजीशन थी। ऊपर आदरणीय राजीव जी की कमांड थी और उस वक्त सीनियर, वैल रिगार्डेड मिनिस्टर सरदार बूटा सिहं थे। 25-30 उनके चुने हुए ऑफिसर थे। With a single unit of command, control and authority those Games were put through. That is my reading of the situation.

People still talk about that. It was a very effective construct but in case of these Games we have to go from what the Commonwealth Games Federation has put on us on 13th of November, 2003 at Montego Bay, Jamaica, signed by the Government of India, signed by the Government of Delhi, signed by then Lieutenant Governor of Delhi and signed by the Indian Olympic Association. वह एग्रीमेंट क्या है। उसके बारे में, मैं आपको मुक्तसर बताना चाहता हूं-

> "The Government of India has to create the infrastructure, pay for all the major things, pay for all the major things, get them build and to provide all the funds as required, minimize tax on materials brought in inside on import of equipment and meet all the deficit whatever be them, whatever level at the end of the Games. This is solemnly signed. There is a sovereign guarantee there. Profits, if anyâ€¦."

अगर हो जाए, वैसे कभी दुनिया में ऐसा हुआ नहीं हुआ, क्योंकि मुझे मालूम है, एथेन्स से लेकर बीजिंग तक या आगे लंदन भी आएगा, देखेंगे कि खेलों में प्रॉफिट नहीं होता।

मैं कुछ खेलों को जानता हूं और इनके बीच में मैं 1968 ओलम्पिक में मैक्सिको भी गया था। I took the Indian team in some appointment after that. मैं पीछे हट गया कि यहां तो खेलों में घुसकर टेढ़े काम करो या फिर सिविल सर्विस, जो मैं कर रहा था, उसको सीधे तरीके से चलाओ। मेरा इंटैरेस्ट सारी उम्र कायम रहा। मैं हर एक खेल के रिकार्ड टाइम देखता रहता हूं। तो यह लिखा हुआ है: Profit, if any, is to be shared. Indian Olympic Association or Commonwealth Games Federation बांट लेंगे, हमको एक रुपया भी नहीं मिलेगा। यह बड़ी इंटैरेस्टिंग चीज़ है, लेकिन यह प्रोवीजन है। इंडियन ओलम्पिक एसोसिएशन को क्या कहा गया, यहां क्लाजेज़ में लिखा हुआ है: "To establish an Organising Committee. IOA will make an Organising Committee to work with it and be responsible for organising and staging the Games." What is going to happen for 15 days, जो खेल होने हैं, उसका सारा बन्दोबस्त, सारी जिम्मेदारी, सारी एथॉरिटी आर्गेनाइजिंग कमेटी के हाथ में है। इसमें किसी को शंका नहीं होनी चाहिए, यह लिखा हुआ है।

आर्गेनाइजिंग कमेटी 10 फरवरी, 2005 को रजिस्टर हुई, वह 484 मैम्बर्स की कमेटी थी, As proposed by the Indian Olympic Association. अभी कुछ देर हुई, कुछ उसको जरूरी वजह करके 454 पर किया। Still, it is 454. There are 25 Committees with about 1600 staff. This is the fundamental structure. मैं आगे आकर उसका जिक्र करूंगा, ब्रॉडली पिक्चर यह बनी है।

गवर्नमेंट ऑफ इंडिया तो स्टेडियम बनाएगी, I will explain all the major ones and as to what has been done. The Organising Committee will conduct the actual Games. पैसे उनको 1620 करोड़ रुपये देने हैं। उसके साथ कुछ और भी ऑफ साइट के लिए दिये, जिनको टैम्पोरेरीली फिटिंग्स में सिम्पल इंग्लिश में कहता हूं, ऑफ साइट्स ये लोग कहते हैं, ताकि कोई समझ ही न सके। वे देने हैं और दिल्ली शहर ने भी जो अपने आपको शादी के लिए तैयारी करनी है, वह दिल्ली शहर, दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन पर उनके जो भी हैं, लैफ्टिनेंट गवर्नर हैं, ऊपर जो भी एथॉरिटी है, वह उन्होंने करना है, जैसा उन्होंने समझा, सोचा या कर रहे हैं। This is the division. In other words, there is a three way division. कई दफा पूछा गया, unlike 1982, a single point of powerful total authority, इन गेम्स में डिजाइन नहीं किया गया, मजबूरी होगी। But that is where we are on 10th August, 2010. That is where I found myself when I accepted this job. Therefore, the Government of India is basically a backup to these Games.

जो अब से मैं स्टेडियम बताऊंगा कि हमने बना दिये हैं, आगे जाएंगे, पर जो अब से आगे आने वाले दिनों में खेल होने हैं, सारे लोग आने हैं, उसके अन्दर 12-14 हजार आदमियों का रहने का, बैठने का, ट्रैवल का इन्तजाम करना है। उनका ट्रैवल भी एग्रीमेंट में है कि इतना खर्चा हम यहां कर रहे हैं, बार-बार उसकी चर्चा हुई, उसकी फीगर की जरूरत नहीं है, लेकिन वे फीगर सच हैं, जो जयपाल जी ने कहे थे। अब उससे बढ़ावा किसी को नहीं लेना चाहिए। These are the Government of India figures absolutely authenticated. So, I hope, we can accept them. लेकिन उसमें यह भी है कि जितने 12 हजार खिलाड़ी वगैरह हैं, वे अगर फॉकलैंड से भी आये, वह भी कॉमनवैल्थ में एक हस्ती है, सेंट हेलीना में, जिधर नेपोलियन को रखा गया था, मारा गया था, वह भी चार माइल का आईलैंड है, न्यूज़ीलैंड भी है, इधर है, उधर है, उनको लाएंगे, उनको ले जाना, उनका खर्चा भी अपना है और बन्दोबस्त यहां से है कि उनका ट्रैवल बन्दोबस्त भी होगा, यह न हो कि फ्लाइट मिस कर जाये, नहीं तो गुस्सा होंगे। यहां पर सब कुछ करना है। यह सारा कुछ ही होना है, from the Organising Committee. This is totally different from the past. अब मैं आता हूं कि गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की ड्यूटी स्टेडियम्स की है। हमारे 13 मेजर स्टेडियम्स हैं, essentially, most of what is important.

वह सारा काम सेंट्रल पीडब्ल्यूडी थ्रू दी स्पोर्ट्स अथारिटी आफ इंडिया और इन सब को फंडिंग स्पोर्ट्स मिनिस्ट्री को करना है। वह हमारी जिम्मेदारी है। उनमें नौ जो सबसे बड़े हैं, वे सीपीडब्ल्यूडी को करने हैं। वे कौन से हैं? Jawaharlal Nehru Stadium is the biggest of all. In that Stadium, there are three stadiums. वेट लिफ्टिंग उसमें है और भी बहुत कुछ उसमें है। कमीशन शूटिंग रेंज, लाल मॉल्स वह भी नेहरू स्टेडियम में है, जिमनास्टिक कांप्लैक्स, इंदिरा गांधी स्टेडियम में है, इंदिरा गांधी स्टेडियम में रेसलिंग और साइकलिंग वेलड्रोम हैं। स्वीमिंग पूल तालकटोरा स्टेडियम का, एथेलेटिक्स जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में और वेट लिफ्टिंग भी जवाहर लाल नेहरू में हैं। ये नौ बड़े खेलों के स्थान इस प्रकार से हैं। शेष चार जो कुल 13 में से हैं, बिगबोर शूटिंग रेन्ज, सीआरपीएफ के साथ कागरपुर में बनी है, जो गुड़गांव की तरफ है, आर.के.खन्ना स्टेडियम लॉन टेनिस का है। लॉन टेनिस के प्रधान बैठे हैं, उनको हमने पैसे दिए हैं, जिन्होंने कंस्ट्रक्शन की है। रग्बी की ग्राउंड के लिए हमने पैसे दिए, मेरे ख्याल से तीन सौ करोड़ के आसपास की राशि है, उसको देलही यूनिवर्सिटी ने किया है। जामिया मिलिया ने भी लास्ट आफ देम टेबल टेनिस और रग्बी की ट्रेनिंग का बंदोबस्त किया है। ये हमारे तेरह स्टेडियम हैं।

मैं आपसे जिम्मेदारी से कहता हूं कि जो देरी थी, वह थी, लेकिन मेरे पास टेबिल हैं, मैं आपको दे भी दूंगा। मेरा यह विचार रहता है कि जितनी इन्फार्मेशन शेयर कर सकूं, वह मैं हाउस के साथ करूं। पिछले दो हफ्ते में अगर क्वैश्चन आवर राज्य सभा या लोकसभा में नहीं चला ...(<u>व्यवधान</u>)

श्री शरद यादव (मधेपुरा): इस सदन में हर आदमी ने, कोई एक मेंबर नहीं, सब पार्टियों के सभी मेंबर्स ने एक बात उठायी है कि जो नेहरू स्टेडियम है और दूसरे स्टेडियम्स की मरम्मत पर इतना पैसा क्यों खर्च हुआ है? यह सवाल सभी माननीय सदस्यों ने पूछा है। ...(<u>व्यवधान</u>)

MR. CHAIRMAN : Shri Sharad Yadav, let the hon. Minister speak.

...(*Interruptions*)

डॉ. एम.एस.िगल : महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मित्र और नेता को इतना ही अर्ज करता हूं कि मैं इन सबके जवाब दूंगा। मुझे बीच में न टोकें, नहीं तो मेरा तारतम्य टूट जाएगा। जब मैं बैठ जाऊंगा, तब आप और पूछ लीजिएगा, मैं आपको और बताने की कोशिश करूंगा। मेरी आपसे यह अर्ज है। मैं आपके सवाल का जवाब दूंगा। ...(व्यवधान) हमारे पास लंबा समय है। आप गुरूद्वारे की तरह खुला समय रखिए तो मैं बैठा हुआ हूं।

महोदय, मेरे पास डेट्स भी हैं कि कब-कब इनको शुरू किया गया? तीन स्टेडियम जो मशहूर हैं, 6 अप्रैल, 2008 में मैं आया। शूटिंग, स्वीमिंग और साइकिलिंग वेलोड्रोम, इनके ऊपर तब तक तो खिलाड़ी-मैनेजर्स की बहस हो रही थी कि ऐसे करना वैसे करना है, इंटरनेशनल कुछ और कहता है, नीचे वाला कुछ और कहता है। यह बहुत कुछ चलता है। तकरीबन सारे स्टेडियम हमने वर्ष 2008 और 2009 में बनाये। यह सच बात है। मेरे पास उनके टाइम्स भी हैं। 17 महीने में कोई साइकिलिंग वेलोड्रोम बना है तो कोई 18 महीने में, एक-दो हैं जिनकी शुरूआत वर्ष 2007 में हुयी थी, लेकिन ये एक्चुअली दो, सवा दो साल में बने हैं। I invite everybody to go to the Ministry's website. I keep on loading on it every letter we write or whatever we do. आप उसे पढ़ कर उस पर विचार करिए। ये स्टेडियम बन चुके हैं। पीछे काफी जोर की बारिश आयी थी, जिसके ऊपर चर्चा भी हुयी। प्रेस के दोस्त यहां बैठे हैं, टेलीवीजन के सौ चैनल्स हैं, इतना कंपटीशन है कि उनकी मजबूरी मैं मानता हूं। वह शायद मेरी थोड़ी सी मजबूरी भी समझेंगे। वह टीआरपी के चक्कर में ऐसा करते हैं। यह ठीक है कि नुक्स भी होते हैं, आप अपना घर बना लीजिए, तो 6 महीने तक घर की बीबी नुक्स निकालती रहती है और सरदार जी को झाड़ती रहती है। यह आपने भी देखा है कि यह क्या बनाया है, क्या आपने सुपरवीजन की? यह स्विच नहीं चलती, वह नहीं चलता। मैं तो ओपनली कह रहा हूं। ...(व्यवधान) आप सुनने की शक्ति रखिए। ...(व्यवधान) आप मेरी बात सुन लीजिए। आप बोलते हैं, तो मैं किसी को नहीं टोकता।

I also know this tactic - put off a man. Why do it? But if you wish to, you are sovereign. वे सारे स्टेडियम जोरदार बने हैं। आप आने वाले दिनों में देखेंगे, खेलों में जाएंगे। मैंने हफ्ते, दस दिन में पार्लियामैंट मैम्बर्स को भी ले जाना है कि चलिए, देखिए, क्योंकि हमने कुछ नहीं छिपाना है। मैं इंजीनियर नहीं हूं, आर्किटैक्ट नहीं हूं, लेकिन मेरी छोटी-मोटी समझ कह रही है कि जिसने भी छ: साल पहले डिज़ाइन करवाए, उसमें दुनिया के आधुनिक डिज़ाइन करवाए। आर्किटैक्ट्स इंटरनेशनल हैं, कंस्ट्रक्शन, रूफ बनाने वाले इंटरनेशनल, नेशनल हैं। सीपीडब्ल्यूडी द्वारा भी नेहरू स्टेडियम और स्विमिंग स्टेडियम की रूफ देख लेंगे तो जो मैं कह रहा हूं, आप खुद ही मान जाएंगे। उन्होंने उसके ऊपर टैक्नीकल काम सीखा है, पहले नहीं हुआ था। कामनवैल्थ गेम्स इतनी बड़ी नहीं हैं। मेलबर्न वगैरह में गेम्स किए जाते हैं, मैंने देखा है, मैं पता करता हूं। वे पैसे बचाकर टेम्परारी चीजें कर लेते हैं। हमारे यहां बड़ी लैंविशली कंस्ट्रक्ट, साइज़, डिज़ाइन और सब कुछ हुआ है। आप देख लेंगे। वे तैयार हैं। हरेक में आज और अगले दो महीने एक ऐन्ज़ीक्यूटिव इंजीनियर, सैंट्रल पीडब्ल्यूडी का बैठा रहेगा जिससे जरा भी पानी वगैरह गिरेगा तो वे उसे ठीक करेंगे। मैं आपको बता रहा हूं कि सीरियस कुछ नहीं है। जो चीज दिखाई जाती है, उसे दिखाना भी चाहिए कि बाहर इतना मलबा पड़ा है, मिट्टी पड़ी है। इधर-उधर मिट्टी वगैरह पड़ी हुई है, लेकिन लोग रात-दिन लगे हुए हैं। मैं परसों घूमकर आया था कि क्या हाल है, मुझे ज्यादा मार तो नहीं पड़ेगी। मलबा वगैरह जोरदार तरीके से उठ रहा है और एक हफ्ते में उठ जाएगा। लॉन्स फटाफट लग रही हैं, पेड़ लग रहे हैं। इसकी चिन्ता नहीं होगी।

मेरे दोस्त कीर्ति जी खिलाड़ी हैं। ये बहुत बड़े क्रिकेटर हैं। मैं भी क्रिकेटर हूं, लेकिन अब मैंने उसका नाम लेना छोड़ दिया है क्योंकि मेरा रूझान दूसरे खेलों की मदद के लिए है। श्री सिद्धू नहीं बैठे हुए हैं। मैं उन्हें भी अपने साथ ले लेता कि 17 टैस्ट बैंड्स, टैस्ट कम्पीटिशन्स ऑफ इंटरनेशनल 5-7 कंट्रीज़ हो चुके हैं। नेहरू स्टेडियम के अंदर यह देखना है कि ट्रैक है, वह ठीक है, ट्रैक के ऊपर दोड़ सकते हैं या नहीं, क्या कोई टेक्नीकल नुक्स तो नहीं है। इसे एथलीट जानते हैं। वह सब कार्य हो गया है। Every national newspaper carried the results of those. स्विमिंग पूल में टाइल नहीं है, मैं जाकर चैक कर आया हूं। मैं बताता हूं कि वह क्या है। मैं चैम्पियन नहीं हूं लेकिन थोड़ा सा तैरता हूं। पूल के साथ-साथ साइड में पानी को निकालने के लिए नाली होती है। उसके ऊपर प्लास्टिक के नौ इंच या एक फुट स्कवायर फिट किए हुए हैं। वह थोड़ा सा उलट गया। अगर उलट भी गया तो कोई जहान नहीं उलट गया। लिखने में बैलेंस भी रखना चाहिए। ...(व्यवधान) Please just let me do my own. Please do not do that. ...(*Interruptions*) I am getting the courtesy of greater listeners. ...(*Interruptions*) वहां भी स्विमिंग की कम्पीटिशन हो चुकी है। अपने ही लड़के जो चैम्पियन हैं, उनके भी समय उसमें आए हैं। बाकी भी टैस्ट इवैंट हुए हैं। मैं इतना ही कहता हूं कि एक महीने के अंदर बिल्कुल ठीक-ठाक हो जाएंगे।

एक सवाल उठाया गया कि अगर हमारे एथलीट आज से ही वहां प्रैक्टिस करते तो क्या कर लेते। माफ कीजिए, जो एथलैटिक्स के लिए आए थे, उन्होंने कहा कि हमें शलारू, हिमाचल प्रदेश में जल्दी जाना है। मेरे दोस्त बैठे हुए हैं। वहां हमने हाई आल्टीट्यूड सैंटर पूरा कामयाब किया है, उसे बढ़ाएंगे। वह नौ हजार फुट पर है। मैं उसे देखने जाता हूं। वे वहां चले गए क्योंकि दिल्ली की आबो-हवा ठीक नहीं है।

एथलीट कहता है कि मुझे वहां रखो। लेकिन अगस्त के आखिर तक वे यहां पर आ जायेंगे और एक महीने बहुत प्रैक्टिस कर लेंगे। इसमें भी कोई बहुत सीरियस मामला नहीं था। मैंने स्टेडियम्स के बारे में आपको बताया। 15 ट्रेनिंग एवेन्यूज़ हैं। उसे स्पोर्ट्स मिनिस्ट्री ने पूरे कर दिये हैं। 13 ट्रेनिंग एवेन्यूज़ डीडीए ने करने हैं। उन्होंने कहा है कि हम अगस्त में करेंगे। मैं आपको सीधी बात कह रहा हूं। इसमें और दस या पन्द्रह दिन लगेंगे, लेकिन उन्होंने अगस्त तक कम्पलीट करने के लिए कहा है। दिल्ली गवर्नमैंट ने तीन ट्रेनिंग एवेन्यूज़ कर दिये, लेकिन शिवाजी हॉकी ट्रेनिंग स्टेडियम अभी तैयार नहीं है। उसके बारे में भी वे कहते हैं कि हम पूरा कर देंगे। उसे पूरा करने में वह जोर लगा रहे हैं। यह स्टेडियम्स की पूरी कहानी है।

मैं असली मुद्दा आपके सामने यह रखना चाहता हूं कि स्टेडियम्स बन गये हैं। जो गेम्स विलेज हैं, उसे डीडीए और दिल्ली गवर्नमैंट ने करना है। उसके भी सारे 34 टावर्स खड़े हो गये हैं। वे फर्नीशिंग कर रहे हैं। आपको भी पता है कि वे अल्टीमेटली बिजनेसमैन को जाने हैं। वहां सब शौक से उसे पूरा करने में लगे हुए हैं, क्योंकि उन बढ़िया फ्लैट्स में उनको रहने, ठहरने को मिलेगा। इसके बाद वे फ्लैट्स बिजनसमैन को मिलेंगे, इसलिए वे बड़ी आस से इंतजार कर रहे हैं।

एक आइटम बाकपुला है, जिसके बारे में मैं जिक्र करता हूं और करना चाहिए। मैंने यह कहा था और आज भी कहता हूं कि मैंने पंजाब की रोमांटिक कहानियों में सुना है कि हीर-रांझा तो थे ही, ससी-पुन्नू भी थे, जो चिनाब के किनारे रहते थे। लड़की इधर थी और लड़का उधर रहता था। वह लड़की घड़े पर बैठकर मिलने जाती थी, क्योंकि लड़की बहादुर थी। लड़के तो हमारे जैसे ही होते हैं। ...(व्यवधान) वह कहता था कि तू ही आ जाना। ऐसे ही हो रहा था। यह पंजाब की सच्ची कहानी है। एक दिन किसी ने कच्चा घड़ा दे दिया। चिनाब में आज भी तूफान आया, पाकिस्तान डूब रहा है। हमें इसका दुख है। वहां बहुत नुकसान हो गया। वह डूब गयी। इस तरह दोनों मर गये। मैंने यह कभी नहीं देखा, मैं भी खिलाड़ी हूं कि एथलीट वहां हैं। मेरा दिल नहीं मानता कि यमुना की छाती पर गेम्स हों, लेकिन हैं। ये बहुत पुराने

फैसले हुए हैं। मुझे इस बारे में नहीं मालूम। 15 किलोमीटर दूर नेहरू स्टेडियम है। उन्हें यहां लाना है। 6 अप्रैल को जब मैं मिनिस्ट्री में आया, तो कोई विचार नहीं था कि कैसे लाना है। आपस में आईडियोलॉजिकल जोरदार हो रहे थे कि यह करो, वह करो, निजामुद्दीन के नीचे से जाओ या साइड से जाओ। आपने भी इसे पढ़ा और मैं भी पढ़ता था। मैं उस समय एमपी था। मैंने कुछ चिट्ठियां लिखकर चर्चा भी की और मुझे जो मालूम था, उसका इजहार किया। सात तारीख को मैंने दिल्ली गवर्नमैंट की सारी एडमिनिस्ट्रेशन को बुलाया। मैंने सभी आफिसर्स, सभी इंजीनियर्स को बुलाया। मैंने उनसे कहा कि मुझे पूरी ब्रीफिंग दो कि क्या ऑप्शन्स हैं। उन्होंने कहा कि तीन ऑप्शन्स हैं। मैंने कहा कि इसमें से कौन सा लीस्ट इम्पोसिबल और लीस्ट डेमेजिंग है। I put in that way. अब कुछ करना ही है, नहीं तो 12 हजार उधर स्टेडियम में बैठे होंगे और हम यहां बैठे होंगे। उन्होंने कहा कि यह बात है। 9 तारीख को ग्रुप्स ऑफ मिनिस्टर की मीटिंग श्री अर्जुन सिंह की अध्यक्षता में हुई। मैंने वहां जो कुछ भी किया, वह मेरे को पता है और जो वहां थे, उनको पता है। उस समय जयपाल जी भी थे। वे भी उस वक्त मैम्बर थे। उस दिन मैंने फैसला करवाया और मैंने तेजिन्दर खन्ना को जानबूझकर पंजाबी में कहा कि तेजिन्दर खन्ना कल तो ईंटा लगानी शुरू कर, start putting the bricks; there is no time left. All that has happened, you are aware of and the Delhi Government has also said that it would take us into September to complete it. I am clear that the Delhi Government, and every engineer, every contractor, even international, will do everything because we have got to have that ready.

कंस्ट्रक्शन में तो इतना ही है, और कुछ नहीं है। आर्गनाइजिंग कमेटी के बारे में मैंने आपको बता ही दिया है कि क्या उसकी जिम्मेदारी है, क्या उसकी ताकत है, क्या उसकी ड्यूटी है। करप्शन के बारे में बहुत चर्चा हुई है।...(व्यवधान)

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद पूर्व): हीर-रांझा मेन नहीं है, करप्शन मेन है।...(व्यवधान)

डॉ. एम.एस.िगल: मैं उसी पर आ रहा हूं। आपके लिए हीर-रांझा कुछ नहीं है, मेरे लिए सब कुछ है। ...(व्यवधान) वर्ष 2008 में मेरे आने के महीने भर बाद ही हमारे सामने सवाल आया, दिल्ली हाईकोर्ट में एक केस था। आरटीआई इस देश में एक बहुत जोरदार चीज हुई है, इसे हम सभी मानते हैं। इसका बहुत असर हिन्दुस्तान की पॉलिटी, पब्लिक लाइफ और हरेक चीज पर पड़ रहा है। यह आगे बहुत ज्यादा बढ़ेगा, पूरे देश में, I am not talking of party or anyone. दिल्ली हाईकोर्ट में केस आया। कुछ लोग गए उन्होंने आरटीआई आर्गनाइजिंग कमेटी पर की, इंडियन ओलम्पिक एसोशिएशन और आर्गनाइजिंग कमेटी ने हाईकोर्ट में एतराज किया कि हम तो रजिस्टर्ड सोसाइटी हैं, इसलिए हमारे ऊपर यह लागू नहीं होता है। हमारे पास मामला आया कि एफिडेविट डालो, हमने सारे अफसरों को बुलाया, उनको कहा कि बात करो और डटकर इसमें लिखो कि आरटीआई लगनी चाहिए, होनी चाहिए। हिन्दुस्तान के लोगों को, पार्लियामेंट से अगर यह ताकत मिली है, तो वह कुछ भी पूछना चाहता है तो उसे पूछने का हक है। यह हुआ। हाईकोर्ट की बहुत अच्छी जजमेंट आई। उसको हमने एकदम इंडियन ओलम्पिक एसोशिएशन, आर्गनाइजिंग कमेटी पर लागू किया और लॉजिकली मैंने कहा कि इसे सारे इंडियन फेडरेशन्स पर लागू करो। मैं कहता हूं कि जिसने भी इसको इस्तेमाल करना है, कोई भी नागरिक हो, आरटीआई डालो, जो भी आपको शंका हो, पूछो। जवाब देना पड़ेगा। फिर उसके बाद निर्णय मुझे नहीं करना है, आपने भी नहीं करना है, उसके लिए जो ठीक लोग हैं जैसे कचहरी है, वे करेंगे। मेरा बड़ा क्लियर व्यु है : Full public scrutiny ensures public confidence, मेरा ऐसा विचार है। मैं 35 साल पहले पंजाब में था, किसी दूसरे लेवल पर था और चीफ मिनिस्टर के साथ काम कर रहा था। वहां एक मामला उठा और सारे सचिवालय के कर्मचारी खड़े हो गए तथा सरकार के लिए मुश्किल खड़ी हो गई। मैंने इश्तेहार लगाया था और फार्मूला दिया था कि let the people know; let the people judge. यह मेरा आफिसर होने का चालीस साल का फार्मूला है। Let the people know, let the people judge. सारी सच्चाई सामने आ गई। अगले दिन वे आ कर कहने लगे कि आप हमें तंग करते हैं। मैंने कहा नहीं, आप भी अपनी बात कहिए। उसके बाद स्ट्राइक बंद हो गई।

So I am for it. RTI is there and we have supported it. मैंने तो लिस्ट बनवा कर रखी है कि पिछले डेढ़-दो साल में जो भी शिकायत आई, मेरे आफिसर्स को क्लियर हिदायत थी कि उन्हें भेजें और परस्यु करो तथा जो भी आथोरिटी है, वह इसका फैसला करे। ऐसा ही हुआ और अगर ऐसा नहीं हुआ, तो हम पूछेंगे। अभी भी ऐसा ही हो रहा है। कल-परसों से आप पढ़ रहे होंगे कि कुछ लोगों को हटा दिया गया, कुछ लोगों को पहले सस्पेंड किया गया, वह किसने कराया है? हमने आठ महीने में जोर देकर करवाया है, क्योंकि हम इसे मानते हैं। ऐसा ही हमारा विचार है और आगे भी विचार रहेगा। इसके अलावा मुझे कोई तरीका नहीं आता है। सीएजी का कन्करेंट आडिट बहुत पहले वर्ष 2008 में हमने लगा दिया था कि साथ-साथ आडिट भी होता रहे। कोई भी शिकायत होगी, कोई भी सवाल उठेगा, उसके बारे में मैं आपको कहना चाहता हूं कि हमारी जहां भी जिम्मेदारी है, पूरे जोर से उसे परस्यु करेंगे। There is no question of trying to hide it. मेरी मिनिस्ट्री या मैं, किसी के लिए पर्दा नहीं हूं कि हमारे पीछे कोई छुप कर खड़ा हो जाए। जो भी होगा, हम आगे तक ले जाएंगे, यह भी मैं जानता हूं और मैं आपको निमंत्रण देता हूं कि इसे और उठाएं।

श्री शरद यादव : आपने जो बातें कहीं कि आर.टी.आई. लेकर सब हथियार हमारे पास हैं, लेकिन जो सबसे बड़ा हथियार है, वह संसद है। मैं आपसे एक ही सवाल भारत सरकार के मंत्री के नाते करना चाहता हूं। आपको अच्छी तरह से मालूम है कि देश के मीडिया से लेकर सब तरफ इसकी चर्चा है कि जो ब्रितानिया में हमारे हाई कमिश्नर हैं, वहां जो फंक्शन हुआ, उस कंटैक्स्ट को और यहां की आर्गेनाइजेशन कमेटी के जो लोग हैं, उन्होंने एक पत्र दिखाया। इस पर वहां के हमारे हाई कमिश्नर ने और हमारे विदेश मंत्री दोनों ने कहा कि यह सही नहीं है। यह साफ और सामान्य केस है, इस पर आप क्या कार्रवाई करने वाले हैं, यही मैं आपसे पूछना चाहता हूं।?

डॉ. एम.एस.िगल : आप हौंसला रखिए और धैर्य से मेरी बात सुनिए...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Let the hon. Minister finish his speech! You can ask you queries later.

...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Please sit down. Let him reply.

...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: You have raised the point. Certainly, he will reply to that. Have patience.

डॉ. एम.एस. गिल: यह जो सवाल पूछा गया है, मैं उसके बारे में बताना चाहता हूं। जिस दिन चिट्ठी आई, डिप्टी हाई कमिश्नर से कि ऐसा मामला हमने देखा है, तब

मेरे मंत्रालय ने इन्फोर्समेंट डायरेक्टोरेट को लिखा। उसके बाद ये सारी चीजें जुड़ी हुई हैं, जैसे अभी आर्गेनाइजेशन कमेटी के एक कर्मचारी को फाइनली बर्खास्त किया गया। जो त्रिवेंद्रम का मामला है, उसे भी मैंने लिया। मैं रोज सवेरे छः बजे अखबारों का स्पोर्ट सेक्शन जरूर पढ़ता हूं। मैंने अंडर सेक्रेटरी से लेकर ऊपर तक सबको इस बारे में फोन किया और हम सब उसी वक्त जुट गए इस मामले को देखने के लिए। उसके बाद ही ऐसे लोगों को दूर किया, जो इसमें थे। मैं इस बारे में पूरी डिटेल देने को तैयार हूं। शरद यादव जी, आप इस मामले में जितने उतावले हैं, हम भी उतने ही चिंतित हैं और मैं यह कहना चाहता हूं कि अभी बात खत्म नहीं हुई है।

श्री शरद यादव : आप बात तो ठीक कह रहे हैं, लेकिन क्या कार्रवाई कर रहे हैं? यह तो आपके हाथ में है, आपकी सरकार के भीतर का मामला है...(व्यवधान)

सभापति महोदय: आप बैठ जाएं।

डॉ. एम.एस. गिल: आप बैठ जाएंगे, तो मैं सभी बातों का जवाब दूंगा।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Please sit down. Allow him to reply.

...(*Interruptions*)

SHRI HARIN PATHAK : Sir, the hon. Member has raised some queries, the hon. Minister should reply to them...(*Interruptions*)

DR. M.S. GILL: I will reply to them if they have the courage to sit and listen. जो शरद यादव जी ने कहा है, सैयद शहनवाज जी ने भी कहा है।...(व्यवधान)

सभापति महोदय: मैडम, पहले मंत्री जी को जवाब पूरा करने दें।

...(व्यवधान)

DR. M.S. GILL: Sir, I am not yielding. He may not be allowed to speak like this...(*Interruptions*) आपको खड़ा होने की जरूरत नहीं है, मैं जवाब दे रहा हूं।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Let him complete his speech. You can have the questions later.

...(*Interruptions*)

15.00 hrs.

–

सभापति महोदय : आप लोग क्यों खड़े हो गये?

डॉ. एम.एस.िगल: शरद जी, सुनने की शक्ति भी होनी चाहिए। मेरी तरफ ध्यान दीजिए, मैं आपकी तरफ बहुत ध्यान देता हूं। शाहनवाज जी, आप दोनों ही वरिष्ठ मंत्री रहे हैं, ये दोनों ही मानेंगे कि इंफोर्समेंट डायरेक्टोरेट के पास जिस दिन हमें पता लगा उसी दिन से जोर देकर इस काम पर लगे हुए हैं। लेकिन जजमेंट मैंने नहीं देने हैं। मैं यहां कहता हूं कि वे जल्दी करें और दूध का दूध पानी का पानी करें, मैं कहता हूं जो आप कह रहे हैं। लेकिन अगर दो पुराने कैबिनेट मंत्री मेरे को कहें कि यहां फैसला दीजिए, तो यह बात तो नहीं बनती है। आप भी इस काम में रहे हैं तो मैं भी कुछ कच्चा नहीं हूं। You cannot start a dialogue. I am on my feet....(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : The hon. Minister is not yielding. Sharad *ji*, please sit down.

...(*Interruptions*)

DR. M.S. GILL: I think, you have to also listen to me also now. It cannot become a dialogue, though, mind you, I can carry it on, but I would not. That is not right.

इसलिए जो बात मैं कह रहा हूं, जिसपर सरकार वचनबद्ध है, जिस पर प्रधान मंत्री जी वचनबद्ध हैं कि देखिये ये खेल तो आप सबने कहा। आप सब का भाषण मैंने सुना और आपने बहुत ठीक कहा क्योंकि अल्टीमेटली आपको भी देश का दर्द है, हैं ना थोड़ा सा।...(व्यवधान) सुनिये, मैं इसको और करैक्ट करता हूं। ...(व्यवधान) आप सुनिये।

MR. CHAIRMAN: I will allow you. Let him complete.

...(*Interruptions*)

डॉ. एम.एस.िगल: मैंने जो अभी कहा मैं उसकी तरमीम करता हूं। मैं कहता हूं कि ये बहुत देशभक्त हैं, मैं छोटा देशभक्त हूं। ठीक है ना, सब खुश हैं। मैं फिर खेलों को ऊपर ले जाता हूं। आप सबने कह दिया कि 35 दिनों में तो यहां पर हजारों लोग आ रहे हैं। आप सबने भी कहा कि खेल तो करवाने हैं। जो इसकी तारीख थी, किसने कमी की, किसने गड़बड़ी की, उस पर जोर से कार्रवाई करनी है, आप भी कहते हैं, हम भी कह रहे हैं। मैं एक बात और कहूंगा कि मैं खिलाड़ियों को सुनता हूं, हर चैनल पर रोज रात को एक घंटे की बहस होती है, बहुत लोग इधर के भी और उधर के भी उसमें जाते हैं और आपस में बहुत बहस होती है। मैंने अमृतराज को सुना, टेनिस खिलाड़ी है, उसे मत्था टेकता हूं। उसके लेवल का कोई नहीं हुआ। उससे पहले कृष्णन बाप-बेटा इस क्षेत्र में थे। उसने कहा कि हमें बहुत दुख हो रहा है कि चार साल से खिलाड़ी परिश्रम कर रहे हैं, पसीना बहा रहे हैं, इनका दिल क्यों तोड़ रहे हो, बाद में जो कुछ करना हो कर लेना, लेकिन खेल को कामयाब करेंगे या नहीं करेंगे। आपने भी यही कहा और यह नुक्ता किसी को भी नहीं भूलना चाहिए। नेहवाल लड़की भी यही कहती है, पता नहीं क्या कारनामे करेगी। अभी तेजस्वनी सावंत मुझे कल मिलने आई थी, गगन नारंग आया।

वे आस लगाए बैठे हैं। मैं एक और अफसोस की बात कहना चाहता हूं कि अगर यहां खेल हो रहे हैं और आठ साल का समय बीत गया है, तब आप रिश्ता तोड़ने जा रहे हैं। अगर इतना पैसा खर्च हो रहा है, तो क्या हिंदुस्तान का नाम रोशन करना है या नहीं करना है? मैं अपने दोस्तों को कहना चाहता हूं कि सर्च लाइट उनके ऊपर क्यों नहीं करते हैं कि कौन आगे जाएगा, कौन पीछे जाएगा, कौन अच्छा करेगा और कितने मैडल होंगे?...(<u>व्यवधान</u>) मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि पिछले ढाई साल में सरकार ने एक काम किया है कि 678 करोड़ रुपए केवल कोचिंग के लिए रखे हैं। इससे पहले साल में केवल 38 करोड़ रुपए ही मिलते थे। ढाई साल से 42 विदेशी कोच के लिए 20 करोड़ रुपए खर्च किए गए। जितने एथलीट्स हैं, बेशुमार इन्हें इंटरनेशनल ट्रेनिंग दी और कम्पीटिशन में भेजा। हमें पूरी उम्मीद है कि ये बहुत बढ़िया काम करेंगे। आप इनकी तरफ भी देखिए। हमारे आपस में लड़ने के तो बहुत मौके हैं, फिर कर लेंगे, दोबारा भी करेंगे।

मैंने प्रश्नों की पूरी लिस्ट बनाई हुई है। Cost of escalation of stadia. एक तो समय पर काम पूरा होता है। आप सभी जानते हैं कि कंस्ट्रक्शन में क्या-क्या फैक्टर्स मैटर करते हैं, लेकिन मैं दोबारा कहता हूं कि जब आप देखेंगे the level and grandeur of the stadiums तो आपको पता होगा कि इनका क्या होगा और कितनी कास्ट आएगी।...(<u>व्यवधान</u>) You can say anything, my friend. आप अभी नहीं, मेरी बात समाप्त होने के बाद कहना।...(<u>व्यवधान</u>) आप अभी मत बोलिए। ...(<u>व्यवधान</u>)

MR. CHAIRMAN : Hon. Member, the hon. Minister is not yielding. What can I do? Please sit down.

â€¦(<u>व्यवधान</u>)

श्री गोपीनाथ मुंडे (बीड): महोदय, हमने मांग उठाई थी कि इस मामले पर जेपीसी गठित की जाए।...(<u>व्यवधान</u>) वह भ्रष्टाचार के मामले को देखे। इस बारे में कुछ नहीं कहा है।...(<u>व्यवधान</u>)

DR. M.S. GILL: Sir, I am answering them. ...(*Interruptions*) I am answering them. ...(*Interruptions*) I have a figure. दिल्ली सरकार के सभी स्टेडियम्स की बात नहीं कह रहा हूं, उनकी 1300 करोड़ रुपए की राउंड फिगर कॉस्ट थी और वह कॉस्ट अब 2903 करोड़ रुपए है। यह फिगर बड़ी है।...(<u>व्यवधान</u>) Please understand the reasons also. मैं मुंडे जी को बताता हूं कि बर्डनेस्ट 2000 करोड़ रुपयों में बना था। वाटर क्यूब स्वीमिंग पूल बीजिंग में है।...(<u>व्यवधान</u>) आप मेरी बात सुनिए, मैं उसकी बात भी करूंगा।...(<u>व्यवधान</u>) मुझे लगता है कि सुनने की शक्ति कम है।...(<u>व्यवधान</u>)

MR. CHAIRMAN: Hon. Minister, please look at the Chair and speak.

डॉ. एम.एस.िगल : आप मेरी बात सुनिए, you are not the only expert. ...(*Interruptions*)

सभापति महोदय : ऑनरेबल मिनिस्टर बोल रहे हैं।

â€¦(<u>व्यवधान</u>)

MR. CHAIRMAN : Mr. Anurag Thakur, let the hon. Minister reply. Please take your seat.

...(*Interruptions*)

डॉ. एम.एस.िगल : लंदन का स्टेडियम, जो ओलंपिक्स का है, उसकी कॉस्ट 4,296 करोड़ रुपए है।...(<u>व्यवधान</u>) जवाहर लाल नेहरु स्टेडियम एक स्टेडियम नहीं है, इसमें वेट लिफ्टिंग भी है, उसमें लॉन बॉल्स भी है, नाडा की भी फैसिलिटी हैं, एडमिनिस्ट्रेटिव भी, इसमें दस चीजें हैं। आप इनसे कम्पेयर कीजिए। महोदय, मैं इन्हें फाइनली एक और तरीका बताता हूं। अगर आप तरीका पूछते हैं तो वह यह है कि संसद ने जो आरटीआई कानून बनाया है, उसके जरिए आप एकदम जिस स्टेडियम के बारे में पूछेंगे हम उसका पूरा हिसाब देंगे।...(<u>व्यवधान</u>)

सभापति महोदय : मिनिस्टर बोल रहे हैं।

â€¦(<u>व्यवधान</u>)

श्रीमती सुषमा स्वराज (विदिशा): सभापति जी, मैं कुछ कहना चाहती हूं।

डॉ. एम.एस. गिल: आप मुझे भी मौका देंगी? Sushmaji, I would hear you but you must also give me a chance...(*Interruptions*)

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति महोदय, मैं बहुत शांति से गिल साहब का जवाब सुन रही थी। लेकिन उन्होंने आखिर वाक्य बोला है, उससे संसद की उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लगाया है। उन्होंने कहा है अगर आपको जवाब चाहिए तो आप आरटीआई करिए, हम जवाब देंगे। इसका मतलब आरटीआई इस सदन से ज्यादा ऊपर हो गई? ...(<u>व्यवधान</u>)

DR. M.S. GILL: No...(*Interruptions*)

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, उन्होंने सीधा कहा कि अगर जवाब चाहिए तो आरटीआई करेंगे तो जवाब देंगे।...(व्यवधान)

DR. M.S. GILL: What I said...(*Interruptions*)

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति जी, यह सदन पूरे देश का प्रतिनिधित्व करता है। ...(व्यवधान)

DR. M.S. GILL: What I said was ...(*Interruptions*)

15.13 hrs.

(Dr. M. Thambidurai *in the Chair*)

श्रीमती सुषमा स्वराज : इसमें हर राजनीतिक दल के व्यक्ति ने बोलते हुए कुछ प्रश्न पूछे हैं, उसका जवाब खेल मंत्री यहां न देकर यह कहते हैं कि आरटीआई करो तो मैं जवाब दूंगा। इससे बड़ी अवमानना इस संसद की नहीं हो सकती।...(व्यवधान) हम वॉक आउट करते हैं। ...(व्यवधान)

15.13 Â½ hrs.

At this stage, Shrimati Sushma Swaraj, Shrimati Harsimrat Kaur Badal

and some other hon. Members left the House

DR. M.S. GILL: Sir, I am winding up...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Please carry on.

...(*Interruptions*)

डॉ. एम.एस. गिल: आदरणीय सुषमा जी ने जो कहा, वह पूरा नहीं था, ठीक नहीं था। मैंने कहा और मैं उसे अब भी दोहराता हूं और दस दफा दोहराऊंगा कि हमें लिखिए, मुझे लिखिए कि इस स्टेडियम का पूरा रिकॉर्ड सैंट्रल पब्लिक वर्क से लेकर दें, हम इस पर विचार करेंगे। अगर इसमें से कुछ भी निकलता है तो हमें बताओ। लेकिन सबको पता है कि कन्सट्रक्शन की कॉस्ट टाइम से बढ़ती है, उसकी रिक्वायरमेंट से बढ़ती है। मैं नेहरु स्टेडियम का उदाहरण देता हूं कि नेहरु स्टेडियम में पिछले साल लेट और एकदम रिक्वायरमेंट आई कि टनल बनाओ। उस टनल में दो घोड़े भी ले जा सकते हैं, वह इतना बड़ा टनल है। उन्होंने कहा कि ओपनिंग सेरेमनी के लिए चाहिए और वह बनाया गया। यह खर्च एड हुए। आपने जिस भी खर्च के बारे में पूछना है आप लिख कर भेज दो, हम बिल्कुल आपको लेकर देंगे और उसके बाद आप किसी भी विद्वान को दिखाओ। ये बातें कच्ची हैं, अगर रूठ कर जाना है तो मैं एक अर्ज करता हूं।

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): जब वे चले गये हैं। उनको चिट्ठी लिख दो, जवाब मांग लो। अगर सवाल करें तो हिसाब दे दो। लेकिन हम यहां बैठे हैं तो आप हमें तो सुना दो, ताकि जल्दी से हम एकाध सवाल पूछ सकें।

डॉ. एम.एस.िगल : मैं आपके लिए अवेलेबल हूं।

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं तो चाहूंगा कि जब आप बोल चुके, तब हम पूछें। लेकिन आपको बोलते हुए एक घंटे से ज्यादा हो गया है।

डॉ. एम.एस.िगल : मुझे सिर्फ इतना ही कहना है, मैं इसे अब खत्म करता हूं, ताकि मुलायम सिंह जी मेरे से सवाल पूछ सकें।

श्री सन्दीप दीक्षित (पूर्वी दिल्ली): सभापति जी, मैं यहां रिकार्ड पर लाना चाहता हूं कि उनके पास हमारा जवाब सुनने की हिम्मत नहीं थी, इसलिए उन्होंने वाक आउट किया। वह जवाब नहीं सुनने के लिए वॉक आउट कर गये। भारतीय जनता पार्टी में जवाब सुनने, सच सुनने की हिम्मत नहीं थी, इसलिए उन्होंने वॉक आउट किया है।

डा.एम.एस.िगल : सर, मुझे सिर्फ इतना ही कहना है कि मैंने आपके सामने रख दिया कि वर्ष 2003 में 5 मई को...(व्यवधान) मुझे उनके प्रश्न को सुनना था, मैने इनके सवाल लेने हैं। मैं आखिरी एक फिकरे में खत्म करता हूं कि वर्ष 2003 में मई में उस समय के आदरणीय प्रधान मंत्री जी द्वारा खेल लिये गये थे और 13 नवम्बर को इस पर साइन किये गये थे। इसकी रुपरेखा मैंने आपको बता दी है। जो केन्द्र सरकार की पूरे पैसे मुहैया कराने की ड्यूटी थी, वह मैंने पिछली मई, जून, 2009 में पूरी कर दी थी। सारी रिक्वायरमैन्ट्स को फंड किया गया था। जो स्टेडियम बनाने थे, वे डेढ़-दो सालों में बना दिये हैं, जैसे भी हुआ, लेकिन वे पूरे हो गये हैं। जब आप उन्हें देखेंगे, तब मानेंगे। यदि कोई भी करप्शन, कोई भी किन्तु-परन्तु है तो आप हमें लिखे, हम जवाब देंगे या जवाब लेकर देंगे और उसकी कोई भी इंक्वायरी चाहिए, चाहे कितनी बड़ी चाहिए, उस पर सरकार विचार करेगी। 15 अक्टूबर के बाद भी सरकार इधर है और हम जवाब देने वाले हैं। हम भागने वाले नहीं हैं।

आखिर में मुलायम सिंह जी मैं आपसे एक ही अर्ज करता हूं कि देश की और इन भाइयों और बहनों की सर्चलाइट को अब खिलाड़ियों के ऊपर लगाओ और हम बंदोबस्त पूरा करें, हमारा नाम ठीक रहे। धन्यवाद।

श्री मुलायम सिंह यादव : सभापति महोदय, मैं दो सवाल करना चाहता हूं। यह चिंता क्यों हुई कि इसमें फिजूलखर्ची भी है और भ्रष्टाचार भी है। इसके कारण क्या हैं? कारण यह है कि चीन में जब खेल हुए तो उनके पास एक भी स्टेडियम नहीं था। उन्होंने 14 नये स्टेडियमों का निर्माण किया। हमारे यहां 14 स्टेडियम्स नहीं बनाये गये, हमारे यहां बहुत सा स्ट्रक्चर पहले का बना बनाया है, चाहे एशियाड खेल हो या अन्यथा, पहले इंदिरा जी ने गेम्स कराये थे, तब का बना हुआ है। सड़के भी बन चुकी हैं। लेकिन चीन को सब कुछ बनाना पड़ा था। वहां सड़के भी बनानी पड़ी थीं और 14 स्टेडियम्स भी बनाने पड़े थे और खेलों से संबंधित तमाम काम उन्हें करने पड़े। लेकिन आखिर उनका तो 30 हजार करोड़ रुपया भी खर्च नहीं हुआ। इसमें सारे विपक्ष और इधर के लोगों को आशंका है कि इसमें फिजूलखर्ची और भ्रष्टाचार हो रहा है। आप यह बता दीजिए कि आपको इतने स्टेडियम्स नहीं बनाने पड़े और स्टेडियम को बनाने के नाम पर इतना सब कुछ करने की जरूरत क्या थी? हमारे यहां पहले से जो स्टेडियम्स हैं, उन्हें साफ-सुथरा कर देना चाहिए था। पेड़ अब लग रहे हैं। अब पेड़ लगाने की क्या जरूरत थी। दिल्ली कौन सी खूबसूरत नहीं है। आप यह बता दीजिए कि दिल्ली को सजाने में लगे है। लेकिन जब गांव, देहात और किसान की बात करते हैं तो गांव और किसान तो उजड़े पड़े हैं।

दिल्ली पहले ही से बेहतर है, अच्छी सड़के पहले ही बन चुकी है, तब फिर सजाने की आवश्यकता क्या थी? हम चीन को दिखाना चाह रहे हैं कि हम गरीब नहीं हैं। तब इंग्लैंड को कहना पड़ा है कि भारत भिखमंगा देश है क्योंकि उसने शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये मदद की थी और आपने ए.सीज. खरीदने में पैसे खर्च कर दिये. क्या यह सच्चाई है? अगर आप पानी का पानी और दूध का दूध कर देंगे तो अच्छी बात होगी। मैं माननीय मंत्री जी का स्वभाव जानता हूं। इनकी नीयत जानता हूं लेकिन सवाल यह है कि हम लोगों को इस बात की शंका है कि आप किन लोगों के बीच में जाकर बैठ गये? फिजूलखर्ची और भ्रष्टाचार हो रहा है। आप भी बड़े खिलाड़ी रहे हैं, मैं भी रहा हूं। मैं अपने छात्र जीवन में उ.प्र. से रैस्लिंग का चैम्पियन रह चुका हूं। मैं कहना चाहता हूं कि चीन में जब औलम्पिक गेम्स हुये तो उसने इतना खर्च नहीं किया, आप क्यों कर रहे हैं? स्टेडियम बनाने हैं, और निर्माण कार्य करवाना है लेकिन चीन कम पैसा खर्च करने के बाद भी ओलम्पिक गेम्स करा चुका है, फिर आप इतना खर्च क्यों कर रहे हैं? हमने ऐसे ही नहीं कहा कि एक लाख 23 हजार करोड़ रुपया खर्च किया जा रहा है। माननीय मंत्री जी इस बात को स्पष्ट कीजिये। स्टेडियम बने नहीं हैं...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : He has not yet completed.

श्री मुलायम सिंह यादव :सभापति महोदय, हम जानते हैं कि देश के सम्मान की बात कर रहे हैं, हम लोग भी देश का सम्मान करते हैं। देश का कोई भी प्रान्त हो, धरती सब की है। जब हमने मांग की है कि कॉमनवैल्थ गेम्स में हो रहे भ्रष्टाचार के लिये जे.पी.सी बना दीजिये तो आप जे.पी.सी. से क्यों भाग रहे हैं? जे.पी.सी. में सरकार का बहुमत होगा, बहुमत कर लें लेकिन मामले की जांच तो करा दें क्योंकि बाद में जांच कराने का कोई मतलब नहीं रहेगा। जांच से पानी का पानी और दूध का दूध हो जायेगा।

MR. CHAIRMAN: Please put your question.

श्री मुलायम सिंह यादव : मेरा सवाल यही है कि इतना खर्चा क्यों हो रहा हैं? चीन में हुये खर्चे से ज्यादा खर्च क्यों हो रहा है...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Mr. Minister, you may please sit down. I will call you.

श्री धनंजय सिंह (जौनपुर): सभापति जी, मैं पूछना चाहता हूं कि ...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: You can ask only a question. Do not go to elaborate things. Whatever clarification you want, you can ask only that. Only one question is allowed. I do not want any speech.

SHRI DHANANJAY SINGH (JAUNPUR): I am not going to give a speech.

श्री मुलायम सिंह यादव : पहले हमारा उत्तर आने दीजिये। उसके बाद प्रश्न पूछिये। एक-एक करके उत्तर आने दीजिये। मैं पावर कमेटी का चेयरमैन हूं, हमारी मीटिंग है, मुझे जाना है, इसलिए पहले हमारा जवाब दे दीजिये।...(व्यवधान)

श्री धनंजय सिंह : पहले आप इनका उत्तर दीजिए और फिर मेरे सवाल का उत्तर दीजिये।

डॉ. एम.एस.िगल : महोदय, आदरणीय मुलायम सिंह जी ने स्टेडियम्स के बारे में सवाल पूछा है कि इन पर बहुत खर्चा हो रहा है और ये बहुत बड़े हैं। इन्होंने ऐसा कहा है और अन्य लोगों को भी इस बारे में शंका है। मेरे हिसाब से यह शंका गलत है। ये तो सिर्फ रिपेयर ही करने थे, थोड़े-बहुत टीप-टाप ही करने थे, स्टेडियम तो थे। वर्ष 1982 में छोटे-छोटे स्टेडियम बने थे, आज वर्ष 1982 से 30-32 साल हो गये हैं। हमारा मकान 10 साल में ही चकानाचूर होने लगता है। एक तो यह बात है। दूसरा, मुलायम सिंह जी, जब आप इन्हें देखेंगे, मैं आपको साथ लेकर जाऊंगा और हम कुछ और बातें भी करेंगे, गप-शप मारेंगे, वहां मैं आपको लेकर जाऊंगा। जो आज का नेहरू स्टेडियम है, आप उसे देखकर दंग रह जायेंगे। उसकी ग्रांड आर्किटेक्चर, वह जो फिल्म एंड रूफ है, उसका डिजाइन इंटरनेशनल है, उसके केबल्स मैक्सिको से स्पेशल स्टील से बनकर आये हैं। उसके ऊपर फिल्म आस्ट्रेलिया और न जाने कहां-कहां से आयी है, आर्किटेक्ट स्विटजरलैंड, यूरोप और इंग्लैंड के थे। आप स्वीमिंग स्टेडियम में जाइये, उसे देखकर आप हैरान हो जायेंगे और कहेंगे कि यार, यह तो कुछ और ही चीज बनी है। यह रिपेयर्ड नहीं है। They are frankly new stadiums. They were knocked down and built. I give you the velodrome. मैं बीजिंग गया, यह स्पोर्टस फेडरेशंस भी बहुत पॉलिटिक्स करती हैं, देश की भी और इंटरनेशनल भी, इन्हें यह था कि अब गवर्नमेंट ऑफ इंडिया हाथ में आयी है, इन्हें बोलो कि ये भी बनाओ, वह भी बनाओ, एयरकंडीशन भी करो, ऐसा करो, वैसा करो, ये झगड़े चल रहे थे। मैंने कोशिश की कि पैसे बचाऊं, लेकिन इन लोगों ने देश को पकड़ रहा था। मैंने बीजिंग में इंटरनेशनल साइकिलिंग से मीटिंग भी की, आखिर में मैंने कहा कि हमने मीटिंग भी की, कोई चारा नहीं है, शुरू कीजिये। जो हमने बनाया है, covered with special wooden floor, the finest in the world and air-conditioned. वहां पर इंटरनेशनल साइकिलिंग के प्रेसीडेंट ने आकर, लिखकर सर्टिफिकेट दिया, वह

मेरे अफसरों के पास है, कि "This is as good, if not better, than Beijing." But they spent 135 million dollars. यहां पर 35 मिलियन डॉलर खर्च हुए। यह तो मैं स्टेडियम का कहता हूं।...(व्यवधान) आप लोग सब्र कीजिये, सुनने का हौंसला रखिये। पंजाब एसेम्बली में ऐसे कोई नहीं करता है। आप सब्र से सुनिये। आप प्रश्न पूछ रहे हो तो फिर सुनने की शक्ति भी रखिये।

श्री मुलायम सिंह यादव : पंजाब हो या उत्तर प्रदेश हो, देश की मिट्टी एक है।...(व्यवधान) पंजाब भी हमारा है।

डॉ. एम.एस.िगल : मिट्टी तो एक है, लेकिन ऐसे नहीं करना चाहिए।...(व्यवधान) मैं कह रहा हूं कि आप किसी स्टेडियम के ऊपर सवाल करके भेजिये। एक दम पूरी इंजिनियरिंग की गिनती करायी जायेगी कि क्यों हुआ, कितना हुआ, ठीक हुआ या गलत हुआ। हम ऐसा करने के लिए तैयार हैं।...(व्यवधान) आप पार्लियामेंट और एसेम्बलियों में बहुत समय से रहे हैं।...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : मेरा एक सवाल है। क्या आप गांव, देहात में भी स्टेडियम बनाने का काम करेंगे? मेरा यह सवाल है। क्या आप केवल दिल्ली में ही स्टेडियम बनायेंगे।...(व्यवधान) तमिलनाडु में बना देंगे, क्या गांव, देहात में बनाने का कोई प्रावधान है?

डॉ. एम.एस.िगल : मैं आपको उत्तर देता हूं। जितना आपको गांव का दर्द है, आप जानते हैं कि मुझे भी उतना ही दर्द है।...(व्यवधान) मैंने जोर लगाकर 150 करोड़ रूपये अभी लिये हैं, क्योंकि नीचे इंफ्रास्ट्रक्चर देना है। 1500 करोड़ की पिक्का (पीवाईकेकेए) स्कीम रूरल एरिया की, गांव की चलायी हुई है। इसमें 300 करोड़ रूपये साल का दे रहे हैं। मैं जब तक यहां बैठा हूं, जैसे ये गांव के लिए लड़ते हैं, मैं गांव के लिए लडूंगा, यह सारा हिन्दुस्तान जानता है।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Hon. Shri Mulayam Singhji, you have already raised your point and the hon. Minister has answered.

श्री मुलायम सिंह यादव : महोदय, मैं सदन का बहिष्कार करता हूं।

15.30 hrs.

At this stage, Shri Mulayam Singh Yadav and some other hon. Members left the House

श्री धनंजय सिंह : सभापति महोदय, पूरे विपक्ष ने आर्थिक घोटाले की बात कही है। सभी लोगों ने एक मत से एक बात कही है कि इसकी जांच ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी से करायी जानी चाहिए। मेरी पार्टी भी इस बात से सहमत है कि इस पर जेपीसी गठित की जानी चाहिए। मैं आर्थिक घोटाले के साथ ही साथ विधायी संकट की बात भी करने जा रहा हूं, क्योंकि स्पेशल कंपोनेंट का पैसा भी कॉमनवैल्थ गेम्स के लिए ट्रंसफर किया गया है।...(व्यवधान) Just a minute. I have taken permission from the Chair and not you. This is not the way. ...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN : You tell what you want to say.

...(*Interruptions*)

श्री धनंजय सिंह : महोदय, स्पेशल कंपोनेंट का पैसा भी इस मामले में ट्रंसफर किया गया है। सरकार ने स्वीकार किया कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर के स्टेडियम्स का निर्माण कराया जा रहा है और डेव्लपमेंट भी किया जा रहा है ताकि बाहर से जो खिलाड़ी और पर्यटक आएं तो देश का सम्मान बढ़ सके। मैं शुभकामना देता हूं कि खेल पूरी तरह से सफल हों। 40-50 हजार करोड़ रूपये दिल्ली में इफ्रास्ट्रक्चर और स्टेडियम्स पर खर्च किए गए हैं। वर्ष 1996 Building and Other Construction Labour Welfare Act संसद ने पारित किया था। 40-50 हजार करोड़ रूपये खर्च किए गए हैं, तो मैं जानना चाहूंगा कि लेबर वेलफेयर के लिए क्या उस पैसे को निकाला गया है? इस बिल में यह बात कही गई थी कि कम से कम एक प्रतिशत लेबर वेलफेयर के लिए रखा जाएगा। इतने बड़े इफ्रास्ट्रक्चर पर लेबर काम कर रही है। इसलिए मैं जानना चाहता हूं कि क्या वह एक्ट इम्पलीमेंट हो रहा है या नहीं? मंत्री जी ने जिस प्रकार से कहा कि आप आरटीआई के ज़रिए पूछ लीजिए, हम जवाब दे देंगे। इसका तात्पर्य यह है कि मंत्री जी सदन को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं।...(व्यवधान)

डॉ. एम.एस.िगल : महोदय, कल जयपाल रेड्डी जी ने सदन में कहा था और मैंने भी उतने ही जोरदार शब्दों में ताइदी की है कि जिस भी प्रकार की इनक्वायरी की जरूरत है, वह होगी। मैं भी संसदीय सिस्टम को जानता हूं। मैंने भी इसकी हिस्ट्री पढ़ी है। वह एक अलग कनसैप्ट है। वह करना है या कब करना है, यह सवाल अलग है। लेकिन इनक्वायरी किसी भी चीज की होगी और अवश्य होगी।...(व्यवधान) Sir, let me finish because he has asked me two things. वह कह रहे हैं कि दिल्ली के बजट में कुछ पैसा है जो इधर से उधर किया गया है, वह उनको प्रोसीजर मालूम है, किस मिनीस्ट्री के बारे में यहां और किस मंत्रालय के बारे में विधान सभा में पूछना है। इसका खेल मंत्रालय से कोई संबंध नहीं है।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

*(Interruptions) â€¦ **

MR. CHAIRMAN: Shri Nama Nageswara Rao will ask the last question.

...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: A Member from your party has already raised it. That is all. I cannot allow.

...(*Interruptions*)

श्री विजय बहादुर सिंह (हमीरपुर): महोदय, मेरा केवल एक सवाल है कि 13 मई 2003 को इंटरनेशनल काउंसिल से एग्रीमेंट हो गया था, Why were things started in 2008?...(व्यवधान)

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF WATER RESOURCES (SHRI PAWAN KUMAR BANSAL): Sir, we have had a very elaborate discussion. So, we cannot have a question-answer session this way now. ...(*Interruptions*)

श्री नामा नागेश्वर राव (खम्माम): महोदय, कल से चर्चा चल रही है और इन खेलों पर करप्शन के आरोप लगे हैं...(व्यवधान) मंत्री जी ने कॉस्ट एक्सकलैशन की बात कही है।...(व्यवधान)

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PLANNING AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI V. NARAYANASAMY): The Members are repeating the same thing. Is there any new point in that? ...(*Interruptions*)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Sir, you have vast experience in the Chair of the House. This is not the system. ...(*Interruptions*)

श्री नामा नागेश्वर राव (खम्माम): महोदय, 13 सौ करोड़ से 2930 करोड़ रूपये हो गए हैं। इसके अलावा हर प्रोजैक्ट के लिए 15 से 18 महीने के कम्पलीशन के बारे में कहा था। गेम्स का एक्सकलैशन 150 प्रतिशत बढ़ गया...(व्यवधान)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL: Sir, you have vast experience of presiding over the House proceedings. This is not the way. ...(*Interruptions*)

श्री नामा नागेश्वर राव : सर, मैं प्राइस एस्केलेशन के बारे में पूछ रहा हूं। जैसा अभी बताया गया कि जो 1300 करोड़ रुपए का खर्च था, वह 2930 करोड़ रुपए तक कैसे पहुंच गया और प्रोजैक्ट में 15 से 18 मंथ्स का कंपलीशन पीरियड बताया था, वह भी इतना कैसे बढ़ गया ? ...(व्यवधान)

SHRI PAWAN KUMAR BANSAL : Sir, you have vast experience of presiding over the House here. This is not the way to do it. ...(*Interruptions*)

श्री नामा नागेश्वर राव : इस ऑगस्ट हाउस में मिनिस्टर साहब ने ...(व्यवधान)

श्री पवन कुमार बंसल : आप जो भी सवाल पूछना चाहते हैं, वे सभी इंडस्ट्रियल डिस्प्यूट एक्ट पर होने वाली चर्चा के समय पूछ सकते हैं। ...(व्यवधान)

SHRI V. NARAYANASAMY : Sir, they are going on repeating the same points. ...(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

(Interruptions) â€¦ *